थाती शोध पत्रिका
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 2, अंक 3, अप्रैल - जून 2025
Online Available : https://thati.net/

भारतीय दृश्य कला में पारंपरिक और आधुनिक शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन

प्रहलाद सिंह अहलूवालिया, सम्पादक, शोध प्रकाशन, हिसार, हरियाणा
डॉ प्रकाश दास खाण्डेय, विभागाध्यक्ष, ललित कला विभाग, रोहतक, हरियाणा

सारांश (Abstract):

यह शोध-पत्र भारतीय दृश्य कला में पारंपरिक और आधुनिक शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। भारतीय पारंपरिक कला में धार्मिक, सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति प्रमुख रही है, जैसे कि अजंता की गुफा चित्रकारी, मधुबनी, राजस्थानी लघुचित्र आदि। दूसरी ओर, आधुनिक भारतीय कला ने आत्म-अभिव्यक्ति, नवाचार और सामाजिक आलोचना को केंद्र में रखा है, जिसका प्रतिनिधित्व अमृता शेरगिल, एम. एफ. हुसैन, एस. एच. रज़ा जैसे कलाकारों ने किया। यह अध्ययन दोनों शैलियों की शैलीगत विशेषताओं, विषयवस्तु, तकनीकों और सामाजिक प्रभावों की तुलना करता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय दृश्य कला समय के साथ किस प्रकार परिवर्तित हुई है, और किस प्रकार उसकी जड़ें सांस्कृतिक परंपरा में बनी रही हैं।

कुंजी शब्द (Keywords): दृश्य कला, पारंपरिक शैली, आधुनिक शैली, भारतीय चित्रकला, सांस्कृतिक विरासत, समकालीन कला

1. प्रस्तावना (Introduction):

भारतीय दृश्य कला का इतिहास अत्यंत प्राचीन, समृद्ध और विविधतापूर्ण रहा है। यह केवल सौंदर्य की अभिव्यक्ति मात्र नहीं है, बल्कि भारतीय संस्कृति, धार्मिक मान्यताओं, सामाजिक संरचनाओं और ऐतिहासिक परिवर्तनों का दर्पण भी रही है। चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, भित्तिचित्र और लघुचित्र जैसी विधाओं में यह कला विभिन्न युगों में विकसित होती रही है। प्राचीन भारत की कला में धर्म और अध्यात्म की प्रधानता रही, जबकि आधुनिक भारत की कला में व्यक्ति की अंतरात्मा, समाज की विडंबनाएं और वैश्विक प्रभाव झलकते हैं।

पारंपरिक दृश्य कला ने अपनी जड़ें मंदिरों, महलों और लोक परंपराओं में जमाई हैं। इसकी रचनाएँ प्रायः धार्मिक विषयों, पौराणिक कथाओं तथा राजसी जीवन की घटनाओं से प्रेरित होती थीं। जैसे – अजंता की गुफाओं में बुद्ध के जीवन के प्रसंग, मधुबनी चित्रों में देवी-देवताओं और प्रकृति के प्रतीक, या फिर राजस्थानी और मुगल

लघुचित्रों में दरबारी जीवन की छवियाँ। इन कलाओं में रूपात्मक अनुशासन, प्रतीकात्मकता और तकनीकी सूक्ष्मता देखने को मिलती है।

इसके विपरीत, आधुनिक दृश्य कला उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में औपनिवेशिक प्रभाव, सामाजिक परिवर्तन और पश्चिमी कला आंदोलनों के संपर्क से विकसित हुई। इस काल में कलाकारों ने परंपरागत विषयों से हटकर व्यक्ति की भावनाओं, आत्मसंघर्ष, सामाजिक असमानताओं और राजनीतिक विचारधाराओं को अभिव्यक्त करना शुरू किया। आधुनिक भारतीय कला ने पारंपरिक तकनीकों को पुनर्परिभाषित किया और उनमें नवाचार जोड़े। अमृता शेरगिल, रवींद्रनाथ ठाकुर, मकबूल फिदा हुसैन, एस.एच. रज़ा आदि कलाकारों ने भारतीय कला को एक वैश्विक मंच पर स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

यह शोध-पत्र इसी पृष्ठभूमि में भारतीय दृश्य कला की पारंपरिक और आधुनिक शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसका उद्देश्य यह समझना है कि इन दोनों शैलियों में किस प्रकार विषयवस्तु, तकनीक, अभिव्यक्ति और सामाजिक संदर्भों का विकास हुआ, और भारतीय कला किस प्रकार समय के साथ बदलती हुई फिर भी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ी रही। यह अध्ययन न केवल कलात्मक दृष्टिकोण से, बल्कि सांस्कृतिक और समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य से भी महत्वपूर्ण है।

2. पारंपरिक दृश्य कला की विशेषताएँ:

भारतीय पारंपरिक दृश्य कला हजारों वर्षों से सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग रही है। इसकी जड़ें वैदिक काल से लेकर गुप्त, मौर्य, चोल, मुगल और राजपूत काल तक फैली हुई हैं। इन कलाओं में शिल्प और सुस्पष्ट रूपांकन के साथ-साथ आध्यात्मिक अभिव्यक्ति का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। पारंपरिक दृश्य कला में प्रतीकों का अत्यधिक प्रयोग होता है – जैसे कमल, त्रिशूल, नृत्य मुद्राएँ, मंडल आदि – जो धार्मिक और दार्शनिक अर्थों से परिपूर्ण होते हैं।

धार्मिकता और आध्यात्मिकता: प्राचीन भारतीय कला प्रायः धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों से प्रेरित रही है। बौद्ध, जैन, और हिंदू धर्म के मूल तत्वों को दृश्यों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। अजंता और एलोरा की गुफाओं में बुद्ध के जीवन की घटनाएँ अत्यंत सूक्ष्मता और भावनात्मक गहराई से चित्रित की गई हैं, जहाँ कलाकारों ने धर्मोपदेश, तपस्या, करुणा आदि भावों को रंग और रेखाओं से जीवन्त किया (Chandra, 1992)। इसी प्रकार, दक्षिण भारत के मंदिरों की मूर्तिकला में देवी-देवताओं की विविध रूपों में मूर्तियाँ पारंपरिक धार्मिक धारणाओं को मूर्त रूप देती हैं।

शिल्प और तकनीक: पारंपरिक चित्रकार प्राकृतिक रंगों, भोजपत्र, कपड़े और दीवारों का उपयोग करते थे। रंगों में हल्दी, इण्डिगो, चूना, गेरू, केसर आदि का प्रयोग किया जाता था। इन कलाओं में सजावटी और सजग रेखांकन, नाजुक ब्रशवर्क और सतत पैटर्न की शैली देखी जाती है, जो विशेष रूप से राजस्थानी, पहाड़ी और मुगल लघुचित्र परंपराओं में स्पष्ट होती हैं (Mitter, 2001)। उदाहरण के लिए, किशनगढ़ शैली में 'बनी-ठनी' का चित्रांकन सौंदर्य, संतुलन और रेखाओं की सजीवता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

लोककला और सांस्कृतिक विविधता: भारत की पारंपरिक दृश्य कला में क्षेत्रीय लोककला का भी विशेष महत्व है। मधुबनी (बिहार), वारली (महाराष्ट्र), पटचित्र (उड़ीसा), पिठोरा (मध्यप्रदेश) जैसी लोक शैलियाँ न केवल जन-आस्था का चित्रण करती हैं, बल्कि स्थानीय मिथकों, प्रकृति और सामाजिक रीति-रिवाजों को भी उजागर करती हैं। इन कलाओं में प्रतीकात्मकता के साथ-साथ सामाजिक संदेश भी समाहित होते हैं। उदाहरणस्वरूप, मधुबनी कला में विवाह, फसल और देवी पूजन के दृश्य अत्यंत सामान्य हैं (Archer, 1959)।

समूहिक चेतना और उद्देश्य: पारंपरिक दृश्य कला में रचनाकार का उद्देश्य सामाजिक और धार्मिक अनुष्ठानों को चित्रित करना होता था, न कि व्यक्तिगत भावनाओं को। कलाकार स्वयं को रचना में छुपा लेते थे और कला का उद्देश्य एक सामूहिक चेतना की सेवा करना होता था, जैसे मंदिर की दीवारों पर चित्रकारी या लोककलाओं का त्योहारों में प्रयोग। इस प्रकार की कला एक जीवंत परंपरा का अंग रही जो आज भी कई ग्रामीण क्षेत्रों में सक्रिय रूप से विद्यमान है।

पारंपरिक दृश्य कला की विशेषताओं में धार्मिकता, प्रतीकात्मकता, अनुशासित रेखांकन, प्राकृतिक रंगों का प्रयोग, तथा समाज की सामूहिक अनुभूतियों की प्रस्तुति प्रमुख है। यह न केवल सौंदर्य का माध्यम थी, बल्कि समाज की मूल्य संरचना, आध्यात्मिक चिंतन और सांस्कृतिक आत्मा की अभिव्यक्ति भी थी।

3. आधुनिक दृश्य कला की विशेषताएँ:

भारतीय दृश्य कला के इतिहास में आधुनिक युग एक महत्वपूर्ण मोड़ लेकर आया, जब परंपरा से बाहर निकलकर कलाकारों ने व्यक्तिगत अभिव्यक्ति, समाज-सापेक्ष दृष्टिकोण और नवाचार की ओर रुख किया। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, विशेषतः औपनिवेशिक प्रभाव, पश्चिमी कला आंदोलनों तथा सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनों के कारण भारतीय दृश्य कला में एक नया दृष्टिकोण विकसित हुआ। इस परिवर्तन का आरंभ बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट्स से हुआ और आगे चलकर कई स्वतंत्र कलाकारों व आंदोलनों ने इसे विविध रूपों में विकसित किया। आधुनिक कला ने भारतीय कला को केवल धार्मिक और पौराणिक विषयों से मुक्त ही नहीं किया, बल्कि उसे वैश्विक विमर्श में शामिल भी किया।

ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 2, अंक 3, अप्रैल - जून 2025
Online Available : https://thati.net/

वैयक्तिकता और आत्म-अभिव्यक्ति: आधुनिक भारतीय कला की सबसे बड़ी विशेषता इसकी वैयक्तिकता है। परंपरागत कलाओं में जहाँ रचनाकार का नाम गौण होता था, वहीं आधुनिक कला में कलाकार की दृष्टि, सोच और अनुभव केंद्र में होते हैं। उदाहरण स्वरूप, अमृता शेरगिल की कृतियों में स्त्री की भावनाएँ, ग्रामीण जीवन की जटिलताएँ और समाज के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण दिखाई देते हैं। उनके चित्रों जैसे *'ब्राइड्स टॉयलेट'* या *'थ्री गर्ल्स'* में भारतीय समाज के अंतर्विरोधों का मूक किंतु सशक्त चित्रण मिलता है (Datta, 1985)।

नवाचार और शैलीगत विविधता: आधुनिक कला में शैलीगत बंधनों की कोई सीमा नहीं रही। कलाकारों ने अमूर्तता (Abstract Art), घनवाद (Cubism), अलंकरणहीनता (Minimalism), पॉप आर्ट और अन्य पश्चिमी प्रभावों को आत्मसात कर उन्हें भारतीय परिप्रेक्ष्य में ढाला। एस. एच. रज़ा ने 'बिंदु' को अपनी रचनात्मक भाषा का मुख्य प्रतीक बनाया जो भारतीय दर्शन की व्याख्या करता है और अमूर्त शैली का बेहतरीन उदाहरण है। मकबूल फिदा हुसैन ने घोड़ों, देवी-देवताओं और भारतीय लोककथाओं को आधुनिक प्रतीकों और अमूर्त रेखाओं में पुनर्परिभाषित किया (Kapur, 2000)।

सामाजिक और राजनीतिक चेतना: आधुनिक कला केवल दृश्य आनंद तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसने समाज की विसंगतियों, वर्गभेद, राजनीतिक हिंसा, स्त्री-विमर्श और सांप्रदायिक तनाव जैसे विषयों को भी चित्रित किया। गगनेंद्रनाथ टैगोर और चैतन्य महापात्रा जैसे कलाकारों ने राजनीतिक कार्टून और व्यंग्यात्मक शैली के माध्यम से ब्रिटिश शासन और सामाजिक विडंबनाओं पर सवाल उठाए। यह दृष्टिकोण विशेष रूप से भारत की स्वतंत्रता के बाद की पीढ़ियों में अधिक मुखर हुआ, जब कला को एक वैचारिक हथियार के रूप में देखा जाने लगा।

तकनीक और माध्यम में विविधता: आधुनिक कलाकारों ने पारंपरिक तकनीकों को तोड़ते हुए नए माध्यमों की खोज की। उन्होंने तेल रंग, ऐक्रेलिक, कोलाज, इंस्टॉलेशन आर्ट, डिजिटल मीडिया और फोटोग्राफ़ी को भी अपने अभिव्यक्ति के साधन बनाया। इससे दृश्य कला का दायरा न केवल विषय में, बल्कि तकनीकी दृष्टिकोण से भी विस्तृत हुआ। आज समकालीन भारतीय कलाकार वैश्विक प्रदर्शनियों में डिजिटल, वीडियो और प्रदर्शन कलाओं (performance art) के ज़रिए अपनी पहचान बना रहे हैं।

अंतरराष्ट्रीय पहचान और संवाद: आधुनिक भारतीय कला ने भारत को वैश्विक कला मानचित्र पर स्थापित किया। कलाकारों की प्रदर्शनी पेरिस, लंदन, न्यूयॉर्क, टोक्यो आदि शहरों में आयोजित हुईं। रवींद्रनाथ ठाकुर, नलिनी मलानी, बिकास भट्टाचार्य, और सुभोध गुप्ता जैसे कलाकारों ने अंतरराष्ट्रीय कला संवाद में भारत की भागीदारी सुनिश्चित की। यह पहचान पारंपरिक धार्मिक सीमाओं से हटकर एक वैश्विक मानवीय और कलात्मक विमर्श को उद्घाटित करती है (Mitter, 2001)।

आधुनिक भारतीय दृश्य कला की विशेषताएँ – व्यक्तित्व-केंद्रितता, सामाजिक आलोचना, शैलीगत प्रयोग, तकनीकी नवाचार और वैश्विक संवाद – इसे पारंपरिक कला से अलग करती हैं। जहाँ पारंपरिक कला सामूहिक स्मृति और धार्मिक आस्थाओं की वाहक रही, वहीं आधुनिक कला ने आत्मा, समाज और राजनीति के जटिल प्रश्नों से संवाद स्थापित किया। यह न केवल एक कलात्मक परिवर्तन था, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना के आधुनिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया भी।

4. तुलनात्मक अध्ययन (Comparative Analysis):

भारतीय दृश्य कला में पारंपरिक और आधुनिक शैलियाँ न केवल समय की दृष्टि से भिन्न हैं, बल्कि उनका उद्देश्य, तकनीक, विषयवस्तु और सामाजिक प्रभाव भी अत्यंत भिन्न रहे हैं। इन दोनों धाराओं की तुलनात्मक समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय कला किस प्रकार गतिशील रही है, और किस प्रकार वह बदलते सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक परिवेश में स्वयं को पुनःपरिभाषित करती रही है।

उद्देश्य और दृष्टिकोण का अंतर: पारंपरिक दृश्य कला का उद्देश्य प्रायः धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक रहा है। कलाकार सामाजिक आस्था और धार्मिक आख्यानों को चित्रित करते थे। कला का प्रयोग मंदिरों, महलों और धार्मिक ग्रंथों में दृश्य रूप में ज्ञान के प्रसार के लिए किया जाता था (Chandra, 1992)। इसके विपरीत, आधुनिक कला का उद्देश्य वैयक्तिक अनुभव, सामाजिक चेतना और वैचारिक अभिव्यक्ति रहा है। आधुनिक कलाकारों ने समाज के प्रति अपनी प्रतिक्रिया, असहमति और भावनात्मक संघर्ष को कला के माध्यम से अभिव्यक्त किया (Kapur, 2000)। यह परिवर्तन भारतीय समाज में व्यक्ति की भूमिका को पुनर्परिभाषित करने की प्रक्रिया का भी संकेतक है।

शैलीगत और तकनीकी भिन्नता: पारंपरिक कला में अनुशासित रेखाएँ, प्रतीकात्मक रंग योजना, समरूपता और शास्त्रीय मानकों का पालन अनिवार्य होता था। जैसे कि मुगल लघुचित्रों में सीमित रंग, सटीक रेखांकन और समरूपता की विशेष तकनीक अपनाई जाती थी (Mitter, 2001)। वहीं आधुनिक कला ने इन शैलीगत बंधनों को तोड़ दिया। अमूर्तता, अमिश्रित रंगों का प्रयोग, अनियमित आकृतियाँ और मिश्रित माध्यम (Mixed Media) जैसे प्रयोग आधुनिक कला की पहचान बने। उदाहरणस्वरूप, रज़ा की 'बिंदु' श्रृंखला में पारंपरिक तत्वों का अमूर्त प्रयोग आधुनिक शैली में हुआ।

विषयवस्तु का विकास: पारंपरिक कला की विषयवस्तु अधिकतर पौराणिक, धार्मिक और शासक वर्ग से जुड़ी होती थी। चित्रों में देवता, धार्मिक प्रतीक, राजाओं की गाथाएँ या लोक कथाएँ प्रमुख रहती थीं (Archer, 1959)। इसके विपरीत, आधुनिक कला की विषयवस्तु सामाजिक असमानता, स्त्री विमर्श, शहरी जीवन, मानसिक संघर्ष,

युद्ध और उपभोक्तावाद जैसी जटिल और समसामयिक समस्याओं पर केंद्रित रही। मकबूल फिदा हुसैन की चित्रों में भारतीय संस्कृति के प्रतीकों के माध्यम से आधुनिक समाज की जटिलताओं का चित्रण हुआ है।

दर्शक और प्रयोजन: पारंपरिक कला का निर्माण सामूहिक प्रयोजन के लिए किया जाता था – जनता के लिए, धार्मिक स्थलों के लिए, या राजा की शान में। इसमें कलाकार की पहचान गौण रहती थी। दूसरी ओर, आधुनिक कला मुख्यतः दीर्घाओं, संग्रहालयों और आलोचकों के लिए बनाई जाती है, और यह अक्सर वैयक्तिक प्रतिष्ठा व विचार की वाहक बनती है (Kapur, 2000)। यह अंतर कलाओं की सामाजिक उपयोगिता और लक्ष्य दर्शकों में स्पष्ट रूप से झलकता है।

अंतरराष्ट्रीय प्रभाव और संवाद: पारंपरिक कला अधिकतर स्थानीय और क्षेत्रीय रही है, हालांकि उसमें कुछ समय बाद मुगल, फारसी और तिब्बती प्रभाव दिखाई देने लगे। लेकिन आधुनिक भारतीय कला ने यूरोपीय आंदोलनों जैसे इम्प्रेशनिज़्म, क्यूबिज़्म, स्यूररियलिज़्म आदि से प्रेरणा ली, और एक वैश्विक संवाद का हिस्सा बनी। उदाहरण के लिए, अमृता शेरगिल ने पेरिस में प्रशिक्षण प्राप्त कर भारतीय विषयों को एक वैश्विक दृष्टिकोण से चित्रित किया (Datta, 1985)।

सारांश रूप में तुलनात्मक सारणी:

तत्व	**पारंपरिक दृश्य कला**	**आधुनिक दृश्य कला**
उद्देश्य	धार्मिक, सामूहिक	वैयक्तिक, समाजोन्मुख
शैली	यथार्थपरक, प्रतीकात्मक	अमूर्त, प्रयोगशील
तकनीक	प्राकृतिक रंग, पारंपरिक माध्यम	मिश्रित माध्यम, डिजिटल तकनीक
विषयवस्तु	पौराणिक, धार्मिक, शासकीय	सामाजिक यथार्थ, मानसिक भाव
दर्शक वर्ग	जनसामान्य, धार्मिक समुदाय	बौद्धिक वर्ग, कला समीक्षक

पारंपरिक और आधुनिक भारतीय दृश्य कला के मध्य यह अंतर स्पष्ट करता है कि कला न केवल सौंदर्य का विषय है, बल्कि वह सामाजिक, वैचारिक और ऐतिहासिक प्रवाह का प्रतिबिंब भी है। परंपरा ने जहाँ सांस्कृतिक निरंतरता

ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 2, अंक 3, अप्रैल - जून 2025
Online Available : https://thati.net/

को बनाए रखा, वहीं आधुनिकता ने परिवर्तन, प्रयोग और विचार के नए द्वार खोले। दोनों धाराएँ मिलकर भारतीय कला की पूर्णता को दर्शाती हैं – एक जड़ें, तो दूसरी उड़ान।

5. निष्कर्ष (Conclusion):

भारतीय दृश्य कला का इतिहास एक समृद्ध, जटिल और बहुआयामी यात्रा है, जिसमें पारंपरिक और आधुनिक दोनों शैलियाँ अपनी-अपनी विशेषताओं के साथ योगदान करती हैं। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि भारतीय दृश्य कला न केवल सौंदर्यबोध की एक अभिव्यक्ति है, बल्कि यह समाज, संस्कृति, धर्म और राजनीति के विविध पहलुओं की जीवंत गवाही भी है। पारंपरिक शैलियों ने जहाँ धार्मिक विश्वास, सामाजिक मूल्यों और सांस्कृतिक प्रतीकों को संरक्षित रखा, वहीं आधुनिक शैलियों ने नई दृष्टि, प्रयोग और वैयक्तिक विचारधारा को प्रस्तुत किया।

पारंपरिक कला में एक स्थिरता, अनुशासन और सामूहिकता की भावना है, जो समाज के आस्थावान चरित्र को प्रतिबिंबित करती है। इन कलाओं का उद्देश्य जनसामान्य तक धार्मिक संदेश पहुँचाना, सांस्कृतिक उत्तराधिकार को संरक्षित करना, और नैतिक मूल्यों की स्थापना करना था। कलाकार स्वयं को अपने कार्य के माध्यम से समाज की सेवा में समर्पित करता था, और उसकी पहचान उसकी शैली नहीं, बल्कि उसकी परंपरा से जुड़ी होती थी।

दूसरी ओर, आधुनिक दृश्य कला की यात्रा एक अंतर्मुखी, संवेदनशील और प्रयोगशील अभिव्यक्ति की ओर ले जाती है। यह कला सामाजिक यथार्थ, आंतरिक संघर्ष, स्त्री विमर्श, राजनीतिक टिप्पणी और तकनीकी प्रयोगों की वाहक बनती है। इसमें कलाकार न केवल अपनी पहचान को खोजता है, बल्कि समाज के साथ संवाद करता है – कभी समर्थन में, तो कभी विरोध में। इस कला में जिज्ञासा, प्रश्न, और परिवर्तन की चेतना प्रमुख है।

इस शोध से यह भी स्पष्ट होता है कि पारंपरिक और आधुनिक शैलियाँ कोई परस्पर विरोधी ध्रुव नहीं हैं, बल्कि दोनों एक ही सांस्कृतिक परंपरा के दो अलग-अलग चरण हैं। आधुनिक कला ने पारंपरा से विद्रोह नहीं किया, बल्कि उसे एक नए रूप में, नए प्रश्नों और दृष्टिकोण के साथ पुनः व्याख्यायित किया। कई आधुनिक कलाकारों ने पारंपरिक तकनीकों, प्रतीकों और विषयों को अपनाकर उन्हें समकालीन संदर्भ में प्रस्तुत किया, जिससे एक "संक्रमणशील कला" की नई परंपरा का जन्म हुआ।

अंततः, भारतीय दृश्य कला का तुलनात्मक अध्ययन यह सिद्ध करता है कि कला किसी एक निश्चित परिभाषा में सीमित नहीं होती, बल्कि वह समय, स्थान और समाज के अनुरूप निरंतर बदलती रहती है। पारंपरिक और आधुनिक शैलियाँ मिलकर भारतीय कला को एक ऐसी समग्रता प्रदान करती हैं जो अतीत की जड़ों से जुड़ी होने के साथ-साथ भविष्य की संभावनाओं के लिए भी खुली है। यह एक जीवंत परंपरा है, जिसमें स्थायित्व और परिवर्तन दोनों का सुंदर संतुलन मौजूद है।

ISSN(O) : 2584-2722
वर्ष 2, अंक 3, अप्रैल - जून 2025
Online Available : https://thati.net/

यदि भारतीय दृश्य कला को उसकी संपूर्णता में समझना है, तो हमें इन दोनों शैलियों को टकराव के नहीं, संवाद के रूप में देखना होगा — जहाँ परंपरा की गूंज आधुनिकता की भाषा में अनुवादित होती है।

6. संदर्भ सूची

- Chandra, P. (1992). *Indian Art.* New Delhi: Roli Books.
- Mitter, P. (2001). *Indian Art.* Oxford: Oxford University Press.
- Archer, W. G. (1959). *India and Modern Art.* George Allen & Unwin Ltd.
- Datta, E. (1985). *The Art of Amrita Sher-Gil.* Lalit Kala Akademi.
- Kapur, G. (2000). *When Was Modernism: Essays on Contemporary Cultural Practice in India.* Tulika Books.